Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed/Referred Journal
ISSN 2454-3144 (O)
Volume 09, Issue 02, May 2022 (Special Issue)
http://hillquest.pratibha-spandan.org

कुल्लू की लोक संस्कृति और अध्यात्म

DR. POOJA SHARMA
Assistant rofessor, Muisc Department, Govt. College Panarsa, Mandi

लोक संस्कृति

दो शब्दों के मेल से बना है लोक+संस्कृति; लोक का अभिप्राय सर्वसाधारण जनता है जिसकी व्यक्तिगत पहचान न होकर सामूहिक पहचान होती है। जैसे दीन–हीन शोशित, दलित, जंगली जातियॉ, जन जातियॉ आदि समस्त लोक समुदाय का मिला जुला रूप लोक कहलाता है।

संस्कृति संस्कार देती है। संस्कृति समाज में सीखा हुआ वह व्यवहार है जो समय के साथ–साथ एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में स्थानांतरित होता है। संस्कृति प्रत्येक समाज का धरोहर होता है जिसकी वजह से उसकी एक पहचान बनती है। समाज उससे प्रेरणा लेती है। संस्कृति का अर्थ अगर हम देखें तो यह कह सकते है कि अलग–अलग जगह की अपनी एक अलग संस्कृति होती है। जिसके अन्तर्गत वहॉ का रहन–सहन, खान–पान, पहनावा–ओढ़ावा, व्यवहार, पूजा–पाठ, गीत–संगीत, कला–कौशल व भाषा आती है। इन्ही मिली–जुली संस्कृति को जब लोक मानस अपनाते हैं तो उसे हम ''लोक संस्कृति'' कहते हैं।

लोक संस्कृति की परिभाषा

डॉ0 कृष्ण देव उपाध्याय के अनुसार लोक संस्कृति का अर्थ इस तरह से स्पष्ट किया है । ''लोक संस्कृति से हमारा अभिप्राय जन साधारण की उस संस्कृति से है, जो अपनी प्रेरणा लोक से प्राप्त करती थी। जिसकी उत्सुक भूमि जनता थी बौद्धिक विकास के निम्न धरातल पर उपस्थित थी।

डॉ0 अशोक जैरेथ के अनुसार ''लोक संस्कृति में लोक का अभिप्राय लोक मानस से है जो सामूहिक रूप से समुदाय का प्रतीक है। लोक विष्वास लोक परम्पराऍ और लोक जीवन से सम्बन्धित दूसरी प्रतिक्रियाओं को लोक संस्कृति के अन्तर्गत लिया जा सकता है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि लोक संस्कृति के अन्तर्गत लोगों का धार्मिक, सामाजिक व पारिवारिक जीवन आ जाता है, जिसमें लोक मानस के रीति रिवाज, आचार–विचार, त्यौहार, मेले, पर्व, कला कौशल का विषेश स्थान है। इसलिए हिमाचल प्रदेष के लोक संस्कृति और अध्यात्म का

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed/Referred Journal
ISSN 2454-3144 (O)
Volume 09, Issue 02, May 2022 (Special Issue)
http://hillquest.pratibha-spandan.org

जिला कुल्लू के सन्दर्भ में मैं वर्णन करना चाहती हूँ। जिला कुल्लू पश्चिम दिशा में स्थित एक बहुत ही सुन्दर पर्यटक स्थल है जो व्यास नदी के किनारे बसा हुआ है जो विश्व में देव भूमि के नाम से प्रसिद्ध है, जिसकी तुलना स्वर्ग से की जाती है। यहॉ की संस्कृति परम्पराएं पूर्ण रूप से देव आस्था व देवी देवताओं पर आधारित है। यहॉ के लोक मानस का देवी देवताओं पर अटूट विश्वास है। यहॉ के लोगों का जीवन बहुत ही सरल है। यहॉ के लोग मेहनती, ईमानदार और लोगों के प्रति प्यार, इज्जत, सहायता करने वाले हैं, जो आज भी अपनी संस्कृति को पीढ़ी दर पीढ़ी संजोए हुए हैं।

पारिवारिक जीवन

कुल्लू के लोगों का जीवन अत्यन्त सरल, सुखी और षान्ति प्रिय है। यहां पर आज भी संयुक्त परिवार प्रथा है जिसमें सभी परिवार के लोग मिल–जुल कर रहते हैं और काम करते हैं। परिवार का मुखिया परिवार का वृद्ध व्यक्ति को माना जाता है और उसी के आदेश का पूरा परिवार पालन करता है, जैसे नौकरी करना, खेतीबाड़ी, बाग–बगीचों की देख रेख, पषुओं की देखरेख, घर का काम रिश्ते–नातों में जाना, हर्श विषाद में भाग लेना इत्यादि।

रीति रिवाज

जिला कुल्लू के लोक मानस बहुत ही संस्कारिक है। यहां के रिति रिवाज आज भी पूरी तरह से परम्परा के अनुसार चलते आ रहे है । यहॉ सांझा जीवन जीने की परम्परा है। यहां के लोगों में बहुत मेल मिलाप है शादी–विवाह, जन्म–मरण, देव मेला जिसको देऊली कहते है तो उसे समस्त गॉव के लोग अपना कार्य समझते हैं ओर अपनी–अपनी भागीदारी देते हुए बहुत ही शान्तिपूर्ण ढंग से सम्पूर्ण करते हैं जो केवल आज के समय में कहीं–कहीं देखने को मिलता है।

वेषभूशा

जिला कुल्लू हिमाचल प्रदेश के उन शरद क्षेत्रों में से एक है जहां का मौसम बहुत ही सुहावना होता है। यहॉ के लोग हाथ से बने रंग बिरंगे पट्टू, चोला, ढाठू, गाची, पूला, कुल्लवी टोपी, षॉल, ऊनी कपड़ों का प्रयोग करते है जो अपनी सुन्दरता के लिए पूरे देश में प्रसिद्ध है और अपनी वेषभूशा की एक विषेश पहचान बनाए हुए है।

आभूषण

आभूषण प्राचीन काल से ही स्त्रियों का अभिन्न अंग रहा है जो स्त्रियों की सुन्दरता को और अधिक बढ़ाता है। जिला कुल्लू आभूषणों के माध्यम से भी आकर्शण का केन्द्र रहा है। यहॉ के

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed/Referred Journal
ISSN 2454-3144 (O)
Volume 09, Issue 02, May 2022 (Special Issue)
http://hillquest.pratibha-spandan.org

आभूशण बहुत ही सुन्दर और परम्परागत बनावट के होते हैं। जैसे नाक का लौंग, बाली, कॉटे, श्रृगार पट्टी, चन्द्रहार, नथ, टीक, रानीहार इत्यादि जो आज भी हम लोग, पर्व, त्यौहारों, शादी विवाह, धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक उत्सवों व मेले अनुश्ठानों में देख सकते हैं।

मेले पर्व व त्यौहार

जिला कुल्लू मेले पर्व और त्यौहार के लिए भी आकर्षण का केन्द्र है लोग देवी–देवताओं पर अटूट विष्वास रखते हैं और अपने कुल्ज, ईष्ट की आज्ञा के बिना कोई भी मेला पर्व या त्यौहार नहीं मनाते है। यहॉ के लोग खुशी–खुशी दूर–दूर से मेले, त्यौहार व पर्व में अपने–अपने घर आते हैं, और अपने नाते रिश्तेदारों के पास जाकर मिलते जुलते हैं। गाना बजाना, नाचना, खाना–पीना, हंसना, मौज मस्ती करना आनन्द से जीवन बिताना इन मेलों, पर्व व त्यौहारों का आकर्शण है इन अवसरों पर लोग अपना सुख दुख एक दूसरे से बॉटते है, पौराणिक देवी देवताओं की गाथाऍ गाते है। ढोल नगाड़ों, शहनाई, रणसिंगा, करनाल आदि वाद्य वृन्द के साथ परम्परागत नाटी डालते हैं, गीत गाते हैं और आनन्द की अनुभूति प्राप्त करते हैं।

लोक कलाएं

जिला कुल्लू लोक कलाओं के लिए भी विश्व प्रसिद्ध है यहॉ पर मन्दिरों, भवनों, किलों तथा महलों पर अनेक प्रकार के चित्रकारी के दर्शन होते है, जो यहॉ की संस्कृति को दर्शाता है। यहॉ लगभग सभी घरों में सुन्दर कलाकृतियों के दर्शन होते हैं। पुरोहितों द्वारा बनाए गये विवाह मण्डपों पर भी लोक कला के दर्शन होते हैं और इसी के साथ मूर्तिकला, चित्रकला, वास्तुकला, पहाड़ी चित्रकला, काश्ठकला के लिए भी प्रसिद्ध है। यहॉ के लोगों में शरीर गोदना व मोर तीतर, फूल आदि के चित्र भी शरीर में गोदने की परम्परा है जो काफी समय से चलती आ रही है।

अध्यात्म

आत्मा या परमात्मा के सम्बन्ध में चिंतन या मनन को अध्यात्म कहते है। आत्मा ही परमात्मा है, और परमात्मा को समझने बुझने, जानने और रहस्यमयी जितनी भी चीजें है उनको समझने की मानव प्रक्रिया को ही अध्यात्म कहते हैं। चाहे वो मानव प्रक्रिया मन्त्रो साधन हो व्रतो साधन, धार्मिक काम या यज्ञ अनुष्ठान इत्यादि हो उसे अध्यात्म कहते है। जब इन्सान अपने आप को व परमात्मा को जानने की कोषिष करता है कि वह कौन है तो वहीं से अध्यात्म की शुरूआत होने

लगती है अतः हम यह कह सकते हैं कि आत्मा के अनुसंधान के विज्ञान को ही अध्यात्म कहते हैं।

डॉ0 मुन्षी राम ने अपनी पुस्तक ''वैदिक चिन्तामणि'' में अध्यात्म शब्द को इस प्रकार परिभाशित किया है ''आत्मा से सम्बन्धित आत्मा की अथवा जिसमें आत्मा को सर्वोपरि स्थान दिया जाता है उसे अध्यात्म कहते है।

अध्यात्म की आज के समय में आवश्यकता

जब हम अपने चारों ओर नजर डालते है तो पाते हैं कि आज इन्सान आधुनिकता की ओर कितनी निर्ममता से दौड़ रहा है जिसके कारण वह अपने संस्कार और नैतिक मूल्यों को भूलता व नजर अन्दाज करता जा रहा है जिसके कारण आज के आधुनिक इन्सान की आस्था भी कमजोर पड़ती जा रही है वह कुछ तुच्छ सांस्कारिक वासनाओं को पूरा करने के लिए सामाजिक और नैतिकता की सीमाओं को भी लॉघता जा रहा है और उसी को अपना जीवन का लक्ष्य बना बैठा है। जिसकी बजह से समाज में कई तरह की गम्भीर दिल दहला देने वाले अपराध, चोरी, डकैती, भ्रष्टाचार लूट–मार, योन शोषण जैसे अपराध जो हमारे समाज, देश, धर्म, सभ्यता व संस्कृति को पूरी तरह से नश्ट कर रहा है। अध्यात्म के बिना विज्ञान विनाष कर सकता है परन्तु विकास नहीं क्योंकि आज इन्सान अपने आप को भूलकर हैवान बन चुका है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार रूपि राक्षस उसके मन के धरातल पर इस तरह से तांडव नाच कर रहा है। जिसके कारण वह अपने मन की षान्ति को पूरी तरह से खो चुका है जबकि षान्ति सन्तुष्टि और आनन्द ही मानव के जीवन का परम लक्ष्य है जो केवल मानव को अध्यात्म के द्वारा ही प्राप्त हो सकता है। यदि हमें अपने संस्कृति, समाज, धर्म, सभ्यता को बचाना है तो सबसे पहले अध्यात्म को समझना होगा और उसका पालन करना होगा।

लोक संस्कृति और अध्यात्म का आपस में सम्बन्ध

लोक संस्कृति और अध्यात्म का आपस में बहुत ही गहरा सम्बन्ध है यह एक सिक्के के दो पहलू हैं। एक नदी के दो किनारे हैं क्योंकि संस्कृति मानव को संस्कार देती है और संस्कार से ही अध्यात्म की उत्पत्ति होती है। संस्कार में हमारा खान–पान, उठना–बैठना, पहनावा, पूजा–पाठ, बोल–चाल इत्यादि आते हैं और जिसमें हम अपनी आत्मा व परमात्मा को जानने पहचानने समझने की कोषिष करते है तथा उन से सम्बन्धित प्रक्रियाओं को अपनाते हैं चाहे वह पूजा–पाठ, यज्ञ, धार्मिक अनुष्ठान इत्यादि हो।

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed/Referred Journal
ISSN 2454-3144 (O)
Volume 09, Issue 02, May 2022 (Special Issue)
http://hillquest.pratibha-spandan.org

हिमाचल प्रदेष अपनी धार्मिक परम्पराओं और प्राकृतिक सौन्दर्य के लिए पूरे विष्व में सुप्रसिद्ध है। इसे देव भूमि या देवी देवताओं की भूमि भी कहते हैं। हिमाचल प्रदेष केवल धार्मिक आस्थाओं के कारण ही नहीं बल्कि सामाजिक परम्पराओं रीति–रिवाजों, भाषाओं एवं वेशभूषाओं के कारण भी जाना जाता है। हिमाचल प्रदेष के लोगों का धार्मिक आस्थाओं में अटूट विश्वास है तथा यहॉ का कोई भी धार्मिक उत्सव, महोत्सव, त्यौहार, पर्व, षादी, विवाह, यहॉ तक कि जन्म से लेकर मरण तक कोई भी संस्कार बिना देवी देवताओं के आर्शीवाद के बिना शुभारम्भ या सम्पन्न नहीं होता है। यहॉ किसी भी कार्य को करने से पहले अपने देवी देवताओं से आज्ञा ली जाती है व कार्य सम्पन्न होने के पश्चात् भेंट आदि चढ़ाया जाता है। यहॉ की संस्कृति पूरी तरह से देव आस्था पर आधारित है जिसका स्पश्ट रूप से दर्शन हम शादी विवाह, मेले, पर्व, उत्सव और त्यौहारों में देख सकते हैं। जिसका जीता जागता उदाहरण कुल्लू का दशहरा व मण्डी की शिवरात्रि है जो पूरी तरह से देव संस्कृति को दर्शाती है और इसी के कारण हिमाचल प्रदेश के लोग बहुत ही सीधे–साधे और ईमानदार हैं और अपनी संस्कृति को आज भी देव आस्था के साथ जोड़कर संजोए हुए हैं जो अध्यात्म का ही एक रूप है और लोक संस्कृति हमारी आत्मा से जुड़ी है। जो हमारे भीतर आपस में प्यार करना, ईमानदारी, आपसी मेल–मिलाप, शिष्टाचार की भावना को जागृत करती है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में हम यह देखते हैं कि लोक संस्कृति और अध्यात्म का आपस में बहुत ही घनिश्ठ सम्बन्ध है क्योंकि लोक संस्कृति जन मानस को संस्कार देती है जिसके अन्तर्गत आचार–विचार, व्यवहार, धार्मिक संस्कार, वार्तालाप, भाशा ज्ञान इत्यादि आते हैं जो जनमानस अपने परिवार व समाज से पीढ़ी दर पीढ़ी ग्रहण करता आ रहा है। जो आगे चलकर संस्कार में परिवर्तित होता है। संस्कार ही हमारे नैतिक मूल्यों को जन्म देता है और नैतिक मूल्यों के आधार पर ही अध्यात्म की उत्पत्ति होती है या जन्म होता है। अध्यात्म आत्मा और परमात्मा को जानने व समझने की वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा जन मानस संसारिकता को भूल कर उसकी आत्मा रूपी परमात्मा में लीन हो जाता है जिसका मुख्य उद्देष्य ही जन कल्याण की भावना है और जन मानस का विकास करना है चाहे वह विकास धार्मिक हो, राजनैतिक हो, सामाजिक हो किसी भी प्रकार का हो जिसमें उसका अपना स्वार्थ न होकर जन कल्याण निहित होता है और जन कल्याण की भावना एक अटूट स्तंभ की भूमिका निभाती है और सुसभ्य संस्कृति को पैदा

करने में तथा सभ्य समाज व देष को बनाने में या देश के निर्माण करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है जो आज के भौतिक वादी समय में वहुत आवष्यक है।

संदर्भ

कृष्णदेव उपाध्याय लोक साहित्य की भूमिका पृष्ठ 13 इलाहबादः साहित्य भवन, 1977.

अशोक जेरेथः अभिजात्य संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में लोक संस्कृति, सोमसी, 1985 पृश्ठ 22 शिमला हिप्र कला, संस्कृति और भाषा अकादमी, अंक।

वैदिक चिन्तामणीःपृष्ठ 216 डॉ0 मुन्शी राम।